।। जय माँ सरस्वती ।।

स्मरामि ज्ञानप्रदायिनीम्, अज्ञान-तिमिर-नाशिनीम्
चित्शक्तिविलासिनीम् देवीम् सरस्वत्यै नमाम्यहम् ।।

मेरा हृदय कमल पावन वेदी, आहुति साँसों की धार बने
हे मातु विराजो अंतर में, मन मंदिर पावन धाम बने

हे ब्रह्म सुता, हे ज्ञानमयी, हे हंसवाहिनी नमो तुम्हे
हे श्वेत वसन, हे पद्मस्थिता, हे वीणा वादिनी नमो तुम्हे
हे वाणि परा, बन छंद स्वरा, वैखरी निर्मल झंकार बने
हे मातु विराजो अंतर में, मन मंदिर पावन धाम बने

तुम तन की धमनि शिराओं में, प्राणों का स्पन्दन गायन हो
तुम ही मन में उठते मिटते, भावों का अनहद वादन हो
नर्तन, विज्ञान, कला नूतन, तव भक्ति का संचार बने
हे मातु विराजो अंतर में, मन मंदिर पावन धाम बने

हे मधुर हासिनि, दिव्य रूप, तुम निर्मल ज्ञान प्रकाशन हो
कर अन्धकार का नाश, चहुँ दिशि, धर्म ध्वजा सिंहासन हो
हो जीव मात्र में प्रेम सृजन, सुन्दर सारा संसार बने
हे मातु विराजो अंतर में, मन मंदिर पावन धाम बने

करते हैं समर्पित कर्म सकल,ये भाव पुष्प स्वीकार करो
भक्ति देकर निज चरणों की, निर्मल कर अंगीकार करो
गुरु शीश नवाकर, भवसागर, तर जाने को जलयान बने
हे मातु विराजो अंतर में, मन मंदिर पावन धाम बने